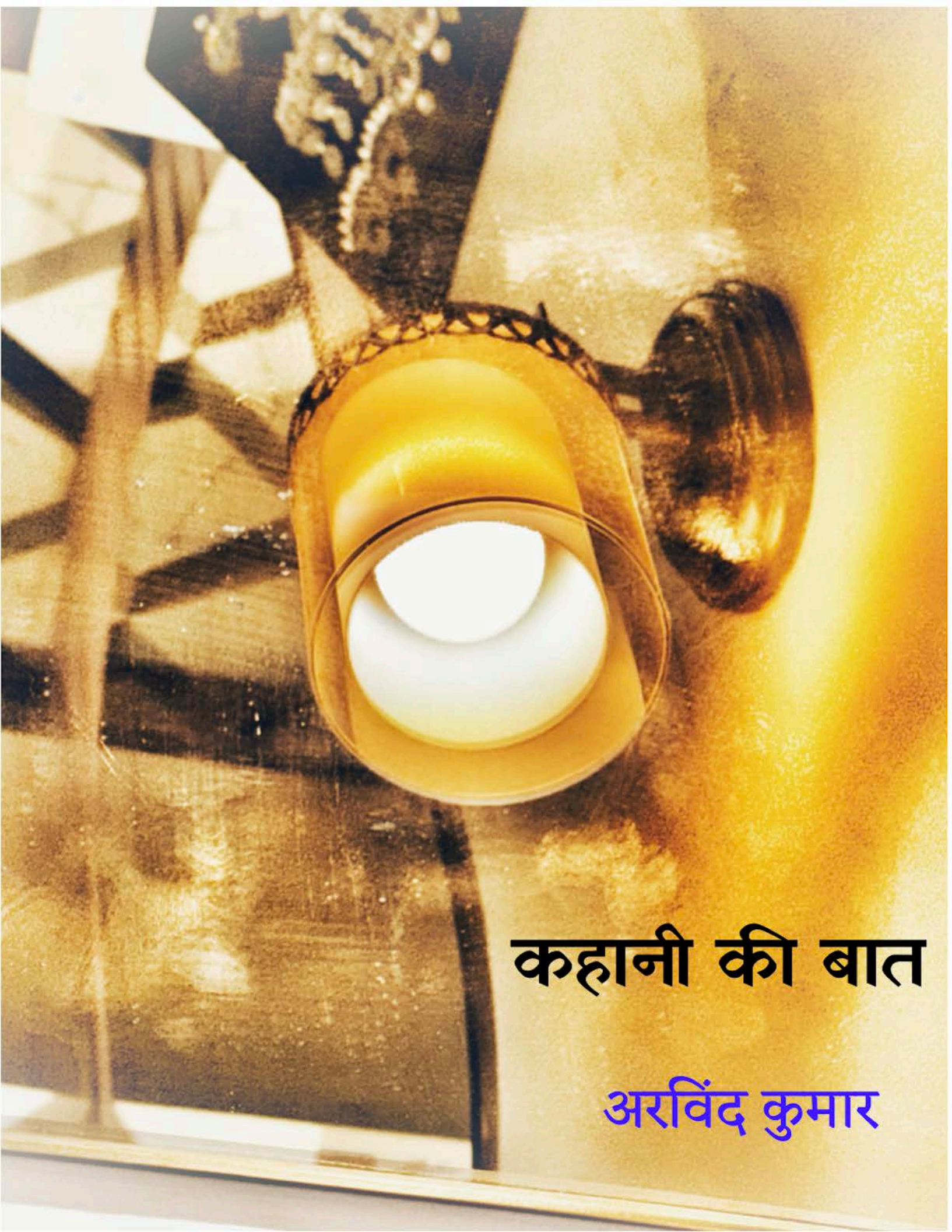

कहानी की बात

अरविंद कुमार

कहानी की बात

अरविंद कुमार

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2025

© अरविंद कुमार

हिंदी आलोचना के प्रबल स्वर

डॉ. रविभूषण के लिए

अनुक्रम

कथा - आलोचना के बहाने	4
प्रेमचन्द और कहानी की स्वाधीनता का मंत्र	8
प्रेमचन्द के साथ बार-बार होने का सुख	36
प्रेमचन्द को पढ़ना क्यों जरूरी है ?	52
मैं असली खुदा बनकर खेला बरखुरदार	80
भाव और अभाव के बीच अवलम्ब की तलाश	98
हम गगन के तल रहेंगे, फूल दुनिया में उगाने	131
स्मृतियों के गहरे बुने तार	150
मैं मृत्यु की वंदना गाता हुआ मरूँगा	173
उजाले भरे क्षितिज की खोज	190
समय और प्रश्नाकुल जीवन	217
बहुरेखीय उत्कर्ष का फलक	246
आजादी और अस्मिताबोध के नये मुहावरे	281
चाक पर उभरती कला और दलित पाठ	319
धरती पर टिके पाँवों की हकीकत	336

परिशिष्ट

मोहन राकेश : घुच्ची आँखों का आकाश / लार्जर दैन लाइफ : लार्जर दैन डेथ	358

कथा - आलोचना के बहाने

यह समय-समय पर लिखे गए मेरे कथा - संबंधी आलोचनात्मक लेखों की तीसरी किताब है। पहली किताब 'हिन्दी कहानी: यथार्थ के नए धरातल' थी तथा दूसरी किताब 'कथा विमर्श के समकालीन संदर्भ' जिनमें मुख्य रूप से हिन्दी के अचर्चित या अल्प चर्चित कथाकारों को कथा - आलोचना की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया गया था। प्रायः होता यह है कि हम अचर्चित या फिर अल्प चर्चित कथाकारों को छोड़कर आगे निकल जाते हैं तथा उन्हें ही याद करते हैं जो धारा के मध्य में होते हैं। इस पुस्तक में प्रेमचन्द तो विरासत के रूप में मौजूद हैं ही, साथ ही उनकी परंपरा से जुड़े वैसे कथाकार शामिल हैं जो प्रेमचन्द को अपना आदर्श मानते रहे और जिन्हें प्रेमचन्द भी अपने जीवन के अन्तिम दिनों में अपनी विरासत के रूप में देखते रहे। भुवनेश्वर तथा राधाकृष्ण ऐसे ही कथाकार हैं जिन्होंने प्रेमचन्द के कथा - शिल्प को अपनाकर कहानियाँ लिखीं। भुवनेश्वर ने अपने जीवन काल में मात्र बारह कहानियाँ लिखीं जिनमें से नौ कहानियाँ अकेले 'हंस' में छपीं। वे किस हद तक प्रेमचन्द से जुड़े थे, इसका पता प्रेमचन्द को लेकर की गयी इस टिप्पणी से चलता है। प्रेमचन्द के 1936 में निधन के बाद 'माधुरी' में उन्होंने लिखा- 'प्रेमचन्द हिन्दी की एक शताब्दी थे। भविष्य का साहित्य-इतिहास इस युग से प्रेमचन्द को लेकर बाकी इत्मीनान से छोड़

देगा ।' आप इसी से अन्दाजा लगा सकते हैं कि प्रेमचन्द के प्रति भुवनेश्वर की क्या सोच थी। भुवनेश्वर एक अति सामान्य जीवन जिए तथा भिखारियों की तरह मरे । प्रेमचन्द का जीवन भी कुछ ऐसा ही था । वे लिखते हैं- 'लेखक के पास होता ही क्या है जिसे वह अलग-अलग बाँट दे । लेखक के पास तो उसकी तपस्या ही होती है, वही सबको वह दे सकता है । पर वह अपनी तपस्या का कुछ भी अंश अपने लिए नहीं रख छोड़ता ।' (प्रेमचन्द घर में)... शिवरानी देवी भी एक घटना का उल्लेख करते हुए कहती हैं- 'जाड़े के दिनों में जब उन्हें प्रेमचन्द के सूती पुराने कपड़े भद्दे जँचे तो उन्होंने दो-दो बार उन्हें गरम कपड़े बनवाने के पैसे दिए पर वे पैसे प्रेमचन्द ने प्रेस कर्मचारियों को दे दिए।' फिर उन्होंने शिवरानी देवी से कहा– 'रानी, जो दिन-भर तुम्हारे प्रेस में मेहनत करे, वह भूखों मरे और मैं गरम सूट पहनूँ, यह तो शोभा नहीं देता।'... राधाकृष्ण एक जगह लिखते हैं 'लोग कहते हैं कि अमुक मर गया । चलो, उसकी बात खत्म हो गयी मगर मैं देखता हूँ कि मरने के बाद बात खत्म नहीं होती । असल बात तो मरने के बाद से ही शुरू होती है। मरनेवाला मर गया, मगर वह लोगों के हृदय में कितना जीवित है। जैसी उसकी जिन्दगी होती है, उसी प्रकार उसका जीवन लोगों के मन में बना रहता है। खास तौर पर जिसने साहित्य से जरा भी सरोकार रखा, उसका जीवन तो मरने के बाद से ही आरंभ होता है। उस जमाने में प्रेमचन्द को मृत्यु के बाद जीते देखा था।'

इस पुस्तक में सत्यवती मलिक भी हैं जिनका जन्म 1906 में हुआ था तथा जो प्रेमचंद के कथा-लेखन से बहुत प्रभावित रहीं । सत्यवती मलिक की कहानियाँ भारतीय समाज में परिवार का बहुविध महत्व प्रतिपादित करती हैं। वे आजादी के दिनों में महात्मा गाँधी और कस्तूरबा के जीवन - आदर्शों से बहुत प्रभावित रहीं और बा के प्रति उनके मन में एक विशेष आदर बना रहा।... रांगेय राघव ने मात्र 39 वर्ष की अवस्था में विपुल साहित्य लेखन किया जो कोई आसान काम नहीं। उनकी कहानियों को अँधेरे से निकालकर रोशनी देने की जिम्मेवारी आज की पीढ़ी पर है। लोग उनकी 'गदल' को याद तो कर लेते हैं पर 'गदल' के बहाने उनकी क्रांतिकारिता या उनके विचारों पर कुछ नहीं कहते ।... और फणीश्वरनाथ रेणु को तो इस पुस्तक में रहना ही था क्योंकि किसी अंचल विशेष के जीवन को जितनी गहराई से रेणु ने अपने कथा-साहित्य में नियंत्रित किया है वैसा कोई अन्य नहीं कर पाया है। इसलिए रेणु हमारे लिए एक बेहद जरूरी कथाकार हैं। इस किताब में समांतर कहानी आंदोलन से जुड़े कथाकार भी शामिल हैं जैसे इब्राहिम शरीफ और स्वयं प्रकाश । इब्राहिम शरीफ अपने जीवन में तथा उसके बाद भी हाशिए पर रहे, उन्हें न तो उनके साथियों ने याद किया न ही हिन्दी पट्टी के लोगों ने स्वयं प्रकाश भी समांतर कहानी आंदोलन के कथाकार थे तथा संजीव, कामतानाथ, इब्राहिम शरीफ, जितेन्द्र भाटिया तथा सुधा अरोड़ा के साथ कहानियाँ लिख रहे थे।... इसी तरह असगर वजाहत तथा पंकज बिष्ट भी सातवें दशक

के कथाकार हैं और उन्हें भी गंभीरता से लिए जाने की जरूरत है। इस पुस्तक में आठवें, नवें दशक के जिन दो कथाकारों को भी शामिल किया गया है, वे हैं - अवधेश प्रीत और पूनम सिंह, जिनकी कहानियों का पाठ भी कथा की एक नयी जमीन तैयार करता है। और अंत में परिशिष्ट । यह मोहन राकेश का जन्मशती वर्ष है, उस मोहन राकेश का जो यह मानते रहे कि जीवन में तटस्थता कुछ नहीं होती, जो यह कहते रहे कि जिधर प्रवृत्ति न हो, उधर कभी मत चलो और जिधर प्रवृत्ति हो, उधर चले हुए हर चरण को अपनी सार्थकता मानो । अतः यह उनके प्रति एक जरूरी कार्यभार था । मेरे लेखों का यह संकलन यदि आपके थोड़ा भी अनुकूल साबित होता है तो यह मेरे लिए खुशी की बात होगी ।

अरविन्द कुमार

प्रेमचन्द और कहानी की स्वाधीनता का मंत्र

प्रेमचन्द के जन्म के एक सौ पच्चीस वर्ष हो गये। इस बीच प्रेमचन्द का मूल्यांकन अलग-अलग आलोचकों ने अपने-अपने हिसाब से किया और इसी क्रम में वे बड़बोले आलोचकों की कृपा के शिकार भी हुए। किसी ने उन्हें सामन्त का मुंशी कहा तो किसी ने उन्हें अगड़ों का लेखक तो किसी ने उन्हें एक मामूली कथाकार की संज्ञा दे डाली। जिस प्रेमचन्द से एक पूरे युग का सूत्रपात होता है, उस प्रेमचन्द को सीमित कर एक घेरा डालने की कोशिश की गयी। जिस स्त्री विमर्श और दलित विमर्श की चर्चा आज हो रही है, उसकी शुरूआत तो प्रेमचन्द से ही हो गयी थी । प्रेमचन्द के समग्र लेखन में दलितों या पिछड़ों के लिए जितनी चर्चा हुई है, वह अभी भी किसी एक व्यक्ति के साहित्य में दुर्लभ है । प्रेमचन्द के दलित तो इस ब्राह्मणवादी महाजनी समाज से पूरी तरह प्रताड़ित दिखते हैं और यही दिखाना प्रेमचन्द का उद्देश्य भी रहा है। फिर भी प्रेमचन्द आज दलित विरोधी करार दे दिये गये हैं । यह कुछ वैसा ही है जैसे तुलसी को स्त्री और दलित विरोधी कहा जाता है ।

प्रेमचन्द का रचनाकाल लगभग उनतीस वर्षों का है जिसमें उन्होंने विपुल साहित्य का सृजन किया। एक अकेले व्यक्ति ने गद्य विद्या को लगभग पूरी तरह साध लिया और ऐसे उपन्यास, कहानियां, निबन्ध, वैचारिक लेख तथा संपादकीय लिखे जो दूसरा